कबीर : व्यक्तित्व, कृतित्व और भक्ति-भावना

पत्र : आदिकालीन और भक्तिकालीन कविता

पाठ लेखक : नीरज

विभाग/कॉलेज : हिन्दी-विभाग, भारती कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली

Scanned with CamScanner

कबीर : व्यक्तित्व, कृतित्व और भक्ति-भावना

- विषय प्रवेश
- कबीर संबंधी विवाद
  - जन्म एवं मृत्यु
  - माता - पिता
  - गुरू
- कबीर : उपलब्ध रचनाएँ
- कबीर की भक्ति-भावना
- कबीर की भक्ति-भावना से संबन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण विद्वानों का कथन :
- स्व-मूल्यांकन प्रश्नमाला

Scanned with CamScanner

विषय-प्रवेश

भारतीय धर्म-साधना के इतिहास में भक्ति आंदोलन एक ऐसी घटना थी जिसने पहली बार ईश्वर और मनुष्य के संबंध के द्वारा धर्म को अनुभव और मूल्य-चेतना का सर्वथा नया मानवीय धरातल प्रदान किया। ऐसे समय और समाज में जहां परमार्थ संप्रदाय में,नैतिकता पक्षपात में,राजनीति निरंकुशता और संस्कृति अलगाव में निरंतर स्तरीकृत हो रही थी भक्त कवियों ने भक्ति को न केवल शास्त्र की जकड़बंदी से मुक्त किया अपितु उसे जनमानस में स्थापित करने का भी ऐतिहासिक कार्य किया। हालांकि कुछ विद्वान भक्ति आंदोलन को एक धार्मिक या सांस्कृतिक आंदोलन मानते हैं तो कुछ विद्वान शुद्धतः साहित्यिक आंदोलन। इन आलोचकों की वैचारिकी के चाहे जो भी आधार रहें हों लेकिन भक्तिकालीन साहित्य के तटस्थ विश्लेषण से यह स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है कि यह वास्तव में सामंती संस्कृति एवं वर्चस्व के विरुद्ध जनसंस्कृति के उत्थान एवं हस्तक्षेप का अखिल भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक आंदोलन है। इसलिए भक्त कवियों की दृष्टि में "मानुष सत्य के ऊपर कुछ भी नहीं है - न कुल,न जाति,न धर्म, न संप्रदाय,न स्त्री-पुरूष का भेद,न किसी शास्त्र का भय और न लोक का भ्रम।"[1] "भारतीय चिंतन परंपरा में के० दामोदरन भी लिखते हैं - "भक्ति आंदोलन का मूल आधार भगवान विष्णु अथवा उनके अवतारों राम और कृष्ण की भक्ति थी। ... यह सिद्धान्त कि ईश्वर के सामने सभी मनुष्य फिर वे ऊंची जाति के हों अथवा नीची जाति के -समान हैं, इस आंदोलन का ऐसा केंद्रबिन्दु बन गया जिसने पुरोहित वर्ग और जाति-प्रथा के आतंक के विरुद्ध संघर्ष करने वाले आम जनता के व्यापक हिस्सों को अपने चारों ओर एकजुट किया। इसप्रकार मध्य युग के इस महान आंदोलन ने न केवल विभिन्न भाषाओं और विभिन्न धर्मों वाले जनसमुदायों की एक सुसंवद्ध भारतीय संस्कृति के विकास में मदद की, बल्कि सामंती दमन और उत्पीड़न के विरूद्ध संयुक्त संघर्ष चलाने का भी मार्ग प्रशस्त किया।"[2]

हिन्दी के सर्वाधिक क्रांतिदर्शी और फक्कड़ कवि,निर्गुण ब्रह्म के महान उद्घोषक,कर्मकांड एवं अंधविश्वासों के विरोधी, प्रखर समाजसुधारक कबीर भक्तिकाल के श्रेष्ठ कवियों में अग्रगण्य हैं। वे न केवल युग प्रवर्तक रचनाकार हैं अपितु पूरे उत्तर भारत में भक्ति को प्रकट करने का श्रेय भी उन्हीं को प्राप्त है -

"भक्ति द्राविड़ उपजी, लाए रामानन्द ।

प्रकट करि कबीर ने, सप्त दीप नव खंड ।।"

कबीर का समय मध्यकालीन इतिहास का वह समय था जब सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में अराजकता अपने चरम विन्दु पर पहुँच चुकी थी। श्यामसुंदर दास लिखते हैं -"मंदिरों को गिराकर उसके स्थान पर मस्जिदें बनाने का लग्गा तो बहुत पहले ही लग चुका था, अब स्त्रियों के मान और

---

1 मैनेजर पांडेय – भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य, पृ० - दूसरे संस्करण की भूमिका

2 के० दामोदरन – भारतीय चिंतन परंपरा ,पृ० 327

Scanned with CamScanner